'आदिवासियों की बुनियादी सुविधाओं में हुआ सुधार'

- एक्सआईएसएस में प्रथम डॉ कुमार सुरेश सिंह मेमोरियल लेक्चर हुआ
- खाखा समिति की रिपोर्ट के आधार पर जनजातीय समाज की स्थिति पर चर्चा

रांची, वरीय संवाददाता। जेवियर समाज सेवा संस्थान में गुरुवार को पहला डॉ कुमार सुरेश सिंह मेमोरियल लेक्चर आयोजित हुआ। विषय आदिवासियों की स्थिति तब (2013) व अब (2023) था। मुख्य अतिथि प्रो वर्जिनियस खाखा ने, खाखा समिति-2014 की रिपोर्ट में उल्लेखित मुद्दों का संदर्भ देते हुए भारत में जनजातीय स्थिति को प्रस्तुत किया। कहा, बुनियादी ढांचे और बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासी समाज की स्थिति में सुधार हुआ है। 2012 से 2018 तक आदिवासी क्षेत्रों में सड़क और कनेक्टिविटी में 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, जबकि एसटी परिवारों के लिए बिजली कनेक्शन में 12% की वृद्धि, पीने के पानी की सुविधाओं में 11.6 प्रतिशत की वृद्धि व शौचालय सुविधाओं में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

कार्यक्रम में निदेशक डॉ जोसफ मरियानुस कुजूर एसजे ने डॉ सिंह के कार्य एवं योगदान को विस्तार से बताया।

PRESS : HINDUSTAN

'बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासियों की स्थिति सुधरी'

जागरण संवाददाता रांची : जेवियर समाज सेवा संस्थान रांची ने डा. कुमार सुरेश सिंह मेमोरियल पर पहला व्याख्यान आयोजित किया। कार्यक्रम एक्सआइएसएस के फा. माइकल वान डेन बोगर्ट एसजे मेमोरियल आडिटोरियम में किया गया। कार्यक्रम उद्घाटन डा. कुमार सुरेश सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर एक्सआइएसएस ने डा. कुमार सुरेश सिंह की 90वीं जयंती पर किया। कार्यक्रम की थीम आदिवासियों की स्थिति उस समय (2013) और अब (2023) था। व्याख्यान के मुख्य अतिथियों में प्रो. वर्जिनियस खाखा के अलावे ध्रुव सिंह भी शामिल रहे। एक्सआइएसएस के निदेशक डा. जोसफ मरियानुस कुजूर एसजे ने कहा कि संस्थान को ऐसे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध सिविल सेवक, इतिहासकार और मानवविज्ञानी के नाम पर एक ट्राइबल रिसोर्स सेंटर स्थापित करने पर गर्व है। प्रो. एमेरिटस, प्रो. वर्जिनियस खाखा ने मेमोरियल लेक्चर में खाखा समिति की 2014 की रिपोर्ट में उल्लेखित प्रमुख मुद्दों का संदर्भ देते हुए देश में जनजातीय स्थिति को प्रस्तुत किया।

कहा कि बुनियादी ढांचे और बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासी लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है। 2012 से 2018 तक आदिवासी क्षेत्रों में सड़कों और कनेक्टिविटी में 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि एसटी परिवारों के लिए बिजली कनेक्शन में 12 प्रतिशत की वृद्धि, पीने के पानी की सुविधाओं में 11.6 प्रतिशत की वृद्धि और शौचालय सुविधाओं में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

PRESS : DAINIK JAGRAN

दैनिक भास्कर रांची 17-11-2023

एक्सआईएसएस: खाखा समिति के अध्यक्ष वर्जिनियस खाखा ने दिया पहला डॉ. कुमार सुरेश मेमोरियल लेक्चर

देश में जनजातीय समुदाय की स्थिति सुधरी, बुनियादी ढांचे और बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासी लोगों की हालत में भी सुधार : खाखा

सिटी रिपोर्टर | रांची

जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस) रांची में गुरुवार को पहला डॉ. कुमार सुरेश सिंह मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। इसका विषय आदिवासियों की स्थिति- उस समय (2013) और अब (2023) था। इस मेमोरियल लेक्चर के मुख्य अतिथियों में प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा, ध्रुव सिंह, डॉ. कुमार सुरेश सिंह के परीवार के सदस्य आदि शामिल रहे। एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ. जोसफ मरियानुस कुजूर ने कहा संस्थान को ऐसे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध सिविल सेवक, इतिहासकार और मानवविज्ञानी के नाम पर एक ट्राइबल रिसोर्स सेंटर स्थापित करने पर गर्व है। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह व्याख्यान भविष्य में विभिन्न विद्वानों को केंद्र की ओर आकर्षित करेगा

संस्थान की ओर से अतिथियों को सम्मानित किया गया।

और एक्सआईएसएस बड़े पैमाने पर जनजातियों पर साहित्य में योगदान देने में सक्षम होगा। प्रो. वर्जिनियस खाखा ने मेमोरियल लेक्चर में खाखा समिति की 2014 की रिपोर्ट में उल्लिखित प्रमुख मुद्दों का संदर्भ देते हुए भारत में जनजातीय स्थिति को प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि बुनियादी ढांचे और बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासी लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है।

ट्राइबल रिसोर्स सेंटर में 3500 किताबें, 400 हस्तलिपियां

एक्सआईएसएस स्थित इस ट्राइबल रिसोर्स सेंटर में लगभग 3500 किताबें, 400 से अधिक हस्तलिपियां, जिनमें बिरसा मुंडा, भारत में जनजातीय आंदोलन, भारतीय जनजातीय समाज आदि सहित कई विषयों पर डॉ कुमार सुरेश सिंह के हस्तलिखित और टाइप किए गए नोट्स उपलब्ध हैं। रिसोर्स सेंटर को डिजिटल बनाने की प्रक्रिया चल रही है जिससे दुनिया भर से इच्छुक लोग इससे जुड़ सकेंगे। इस केंद्र में उपलब्ध इस विशाल संग्रह की सदस्यता और संसाधन केंद्र के समय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कोई भी एक्सआईएसएस लाइब्रेरी को वेबसाइट के माध्यम से जुड़ कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकता है।

PRESS : DAINIK BHASKAR

लेक्चर. एक्सआइएसएस में प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा ने कहा

बुनियादी ढांचे व सुविधाओं के मामले में आदिवासियों की स्थिति सुधरी है

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

बुनियादी ढांचे और बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासियों की स्थिति में सुधार हुआ है. 2012 से 2018 तक आदिवासी क्षेत्रों की सड़कों और कनेक्टिविटी में पांच प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि एसटी परिवारों के लिए बिजली कनेक्शन में 12 प्रतिशत की वृद्धि, पीने के पानी की सुविधाओं में 11.6 प्रतिशत और शौचालय सुविधाओं में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई है.

ये बातें गुरुवार को जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआइएसएस) में आयोजित पहले डॉ कुमार सुरेश सिंह मेमोरियल लेक्चर के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा ने कहीं. इस लेक्चर का थीम था आदिवासियों की स्थिति- उस समय (2013) और अब (2023). उन्होंने कहा कि 2005-06 के बाद से भारत में जनजातियों के

एक्सआइएसएस में आयोजित कार्यक्रम में शामिल अतिथि.

बीच गरीबी भी बढ़ी है. एसटी के बीच कार्य भागीदारी दर (डब्ल्यूपीआर) में 1999-2000 में 70 प्रतिशत से घट कर 2017 में 54.1 प्रतिशत हो गयी है. उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनइपी) 2020 पर भी चर्चा की, जो क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा देती है, हालांकि आदिवासी भाषाओं से अनभिज्ञ हैं और आदिवासी छात्रों के बीच इसका प्रभाव सीमित है. 2013 में प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति का गठन किया था, जिसके अंतर्गत इस समिति को भारत में आदिवासी समुदायों की सामाजिक-आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य स्थिति की जांच करने और उचित हस्तक्षेप व उपायों की सिफारिश करने को कहा गया था. एक्सआइएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मारियानुस कुजूर एसजे ने कहा कि संस्थान को ऐसे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध सिविल सेवक, इतिहासकार और मानवविज्ञानी के नाम पर एक ट्राइबल रिसोर्स सेंटर स्थापित करने पर गर्व है. मेमोरियल लेक्चर का उद्देश्य पिछले 10 वर्षों में विभिन्न विकास संकेतकों जैसे ट्राइबल सब प्लान, स्वास्थ्य, शिक्षा, गरीबी पर आदिवासियों की स्थिति पर चर्चा करना है.

उन्होंने बताया कि एक्सआइएसएस स्थित इस ट्राइबल रिसोर्स सेंटर में लगभग 3500 किताबें, 400 से अधिक हस्तलिपियां, जिनमें बिरसा मुंडा, भारत में जनजातीय आंदोलन, भारतीय जनजातीय समाज आदि सहित कई विषयों पर डॉ कुमार सुरेश सिंह के हस्तलिखित और टाइप किये गये नोट्स उपलब्ध हैं. इस अवसर पर ध्रुव सिंह, डॉ कुमार सुरेश सिंह के बेटे और उनके परिवार के साथ डॉ सिंह के दोस्तों और सहकर्मियों सहित कई अतिथि मौजूद थे.

PRESS : PRABHAT KHABAR

एक्सआईएसएस ने आयोजित किया पहला डॉ कुमार सुरेश सिंह मेमोरियल लेक्चर

राष्ट्रीय सागर संवाददाता

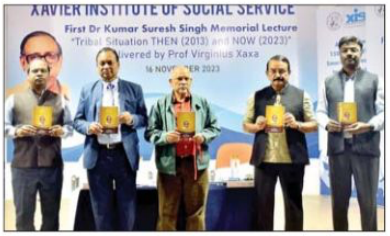

रांची : जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस), रांची ने 16 नवंबर, गुरुवार को पहला डॉ कुमार सुरेश सिंह मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया। कार्यक्रम का आयोजन एक्सआईएसएस के फादर माइकल वान डेन बोगर्ट एसजे मेमोरियल ऑडिटोरियम में किया गया। यह कार्यक्रम डॉ कुमार सुरेश सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, एक्सआईएसएस ने डॉ कुमार के 90वें जयंती पर किया। कार्यक्रम का थीम झ आदिवासियों की स्थिति झ उस समय (2013) और अब (2023) था। वर्ष 2013 में, प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा की अध्यक्षता में एक उच्च-स्तरीय समिति (एचएलसी) का गठन किया था, जिसके अंतर्गत इस समिति को भारत में आदिवासी समुदायों की सामाजिक-आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य स्थिति की जांच करने और उचित हस्तक्षेप उपायों की सिफारिश करने को कहा गया था।

इस मेमोरियल लेक्चर के मुख्य अतिथियों में प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा के साथ-साथ श्री ध्रुव सिंह, डॉ सिंह के बेटे और उनके परिवार के साथ डॉ. सिंह के दोस्तों और सहकर्मियों सहित कई अतिथि शामिल थे, जो डॉ सिंह की विरासत का सम्मान करने के लिए उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत रिसोर्स सेंटर में डॉ सिंह की फोटो को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुई जिसमें सभी गणमान्य व्यक्तियों, एक्सआईएसएस के सभी कार्यक्रमों के प्रमुखों, फैकल्टी और कर्मचारियों ने भाग लिया। एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसफ मरियानुस कुजूर एसजे ने गर्मजोशी से स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। डॉ कुजूर ने मेमोरियल लेक्चर की रूपरेखा तय की और इस विषय की महत्ता को रेखांकित किया, और आदिवासी समाज के लिए डॉ सिंह के कार्य एवं योगदान को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, ''संस्थान को ऐसे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध सिविल सेवक, इतिहासकार और मानवविज्ञानी के नाम पर एक ट्राइबल रिसोर्स सेंटर स्थापित करने पर गर्व है। इस रिसोर्स सेंटर की स्थापना का उद्देश्य इस महान योगदानकर्ता को मान्यता देना और देश भर के विद्वानों को आदिवासी विकास में आगे के शोध के लिए उनके निष्कर्षों से परामर्श करने के लिए प्रोत्साहित करना है। यह मेमोरियल लेक्चर पिछले 10 वर्षों में विभिन्न विकास संकेतकों जैसे ट्राइबल सब-प्लान, स्वास्थ्य, शिक्षा, गरीबी आदि पर आदिवासियों की स्थिति पर चर्चा करता है। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह स्मारक व्याख्यान भविष्य में विभिन्न विद्वानों को केंद्र की ओर आकर्षित करेगा और एक्सआईएसएस बड़े पैमाने पर जनजातियों पर साहित्य में योगदान देने में सक्षम होगा।

प्रोफेसर एमेरिटस, प्रो. वर्जिनियस खाखा ने मेमोरियल लेक्चर में खाखा समिति की 2014 की रिपोर्ट में उल्लिखित प्रमुख मुद्दों का संदर्भ देते हुए भारत में जनजातीय स्थिति को प्रस्तुत किया। उन्होंने केंद्रीय बजट 2021-22 में अनुसूचित जनजाति घटक (एसटीसी) के लिए 78256.31 करोड़ रुपये और 2023-24 में अनुसूचित जनजातियों के लिए विकास कार्य योजना के लिए 12461.22 रुपये के आवंटन का हवाला देते हुए अनुसूचित जनजाति विकास के लिए बजट के उच्च आवंटन पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि, ''बुनियादी ढांचे और बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासी लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है। 2012 से 2018 तक, आदिवासी क्षेत्रों में सड़कों और कनेक्टिविटी में 5% की वृद्धि हुई है, जबकि एसटी परिवारों के लिए बिजली कनेक्शन में 12% की वृद्धि, पीने के पानी की सुविधाओं में 11.6% की वृद्धि और शौचालय सुविधाओं में 35% की वृद्धि हुई है।''

PRESS : RASHTRIYA

First Dr Kumar Suresh Memorial Lecture organised at XISS

PNS : RANCHI

Xavier Institute of Social Service (XISS), Ranchi, organised the First Dr Kumar Suresh Singh Memorial lecture on Thursday at the Fr Michael Van den Bogaert, Memorial Auditorium. The event was organised by Dr Kumar Suresh Singh Tribal Resource Centre, XISS on the 90th birth anniversary of Dr K S Singh.

The theme of the memorial lecture was "Tribal Situation THEN (2013) and NOW (2023)." In 2013, Prime Minister, Dr Manmohan Singh constituted a High-Level Committee (HLC), under the chairmanship of Prof. Virginius Xaxa, mandating it to examine the socio-economic, educational and health status of tribal communities in India and recommend appropriate interventional measures to improve the same.

The guests included the speaker of this memorial lecture Prof Virginius Xaxa along with Dhruv Singh, son of Dr Singh and his family, and several guests including friends and colleagues of Dr Singh who were present to honour the legacy of the late scholar. The commemorative program began with a heartfelt homage paid to Dr K.S. Singh at the Resource Centre, by all dignitaries, Heads of all Programmes at XISS, Faculty, and Staff followed by the main memorial lecture.

Dr Joseph Marianus Kujur, Director, XISS, commenced the proceedings with a warm welcome address. Dr Kujur set the tone for the evening, outlining the theme and dynamics of the memorial talk, offering attendees insight into the profound impact of Dr K.S. Singh's work and contributions. He said "XISS is proud to establish a tribal resource centre in the name of such an eminent and renowned civil servant, a historian and anthropologist. The purpose of establishing this resource centre is to give recognition to the contributor and to encourage scholars across the country to consult his findings for further research in tribal development. This memorial lecture discusses the situation of tribals over different development indicators such as Tribal Sub-Plan, Health, Education, Poverty etc over the past 10 years. I sincerely hope that this memorial lecture will attract various scholars to the centre in future and XISS will be able to contribute to the literature on tribes at large."

Further in the memorial lecture stressing more on the theme, Prof. Xaxa, Professor Emeritus, presented the tribal situation in India, referencing key issues outlined in the 2014 report by the Xaxa Committee. He highlighted the high allocation of budget for Schedule Tribe development citing allocation of Rs 78256.31 crores in Union Budget 2021-22, for Scheduled Tribe Component (STC) and Rs 12461.22 crores for Development Action Plan for Schedule Tribes in 2023-24. He mentioned in his speech that there has been an improvement in the situation of tribal people in terms of infrastructure and basic facilities. He also discussed that from 2012 to 2018, there has been an increase of 5% in roads and connectivity across the tribal regions, while a 12 % increase in electricity connection, 11.6% increase in drinking water facilities, and 35% increase in toilet facilities for ST households.

However, he added that poverty among tribes in India has also increased since 2005-06. There has been a decline in Work Participation Rate (WPR) among STs from 70% in 1999-2000 to 54.1% in 2017. In terms of health services, he pointed out that public health infrastructures like sub-centers and primary health centres are deficit in numbers especially in states like Jharkhand, Odisha, Madhya Pradesh, Maharashtra, and Rajasthan causing a major impact on tribal health. He discussed the National Education Policy (NEP) 2020, which promotes regional language is oblivious of tribal languages and has limited impact among the tribal students.

lastly he discussed about how various attempts have been made in diluting the protective provisions given in the constitution for the tribal people such as Chhota Nagpur Tenancy Act, Santhal Pargana Tenancy Act, Land Acquisition, Rehabilitation and Resettlement Act, India Forest Act, EIA process for environmental clearance etc. through different amendments introduced by the government. He mentioned that the main issue lies in the violation of these protective measures and that the key issues with which tribes in India have been confronted remain intact.

PRESS : THE PIONEER

XISS organised First Dr Kumar Suresh Singh Memorial lecture

Ranchi: Xavier Institute of Social Service (XISS), Ranchi,organised the First Dr Kumar Suresh Singh Memorial lecture on Thursday at the Fr Michael Van den Bogaert, SJ Memorial Auditorium. The event was organised by Dr Kumar Suresh Singh Tribal Resource Centre, XISS on the 90th birth anniversary of Dr K S Singh.

The theme of the memorial lecture was "Tribal Situation THEN (2013) and NOW (2023) "In 2013, Prime Minister, Dr Manmohan Singhconstituted a High-Level Committee (HLC), under the chairmanship of Prof. Virginius Xaxa, mandating it to examine the socio-economic, educational and health status of tribal communities in India and recommend appropriate interventional measures to improve the same.

The guests included the speaker of this memorial lecture Prof VirginiusXaxa along with Dhruv Singh, son of Dr Singh and his family, and several guests including friends and colleagues of Dr Singh who were present to honour the legacy of the late scholar.The commemorative program began with a heartfelt homage paid to Dr K.S. Singh at the Resource Centre, by all dignitaries, Heads of all Programmes at XISS, Faculty, and Staff followed by the main memorial lecture.

Dr Joseph Marianus Kujur SJ, Director, XISS, commenced the proceedings with a warm welcome address. Dr Kujur set the tone for the evening, outlining the theme and dynamics of the memorial talk, offering attendees insight into the profound impact of Dr K.S. Singh's work and contributions. He said "XISS is proud to establish a tribal resource centre in the name of such an eminent and renowned civil servant, a historian and anthropologist. The purpose of establishing this resource centre is to give recognition to the contributor and to encourage scholars across the country to consult his findings for further research in tribal development. This memorial lecture discusses the situation of tribals over different development indicators such as Tribal Sub-Plan, Health, Education, Poverty etc over the past 10 years. I sincerely hopethat this memorial lecture will attract various scholars to the centre in future andXISS will be able to contribute to the literature on tribes at large."

Further in the memorial lecture stressing more on the theme, Prof. Xaxa, Professor Emeritus,presentedthe tribal situation in India, referencing key issues outlined in the 2014 report by the Xaxa Committee. He highlighted the high allocation of budget for Schedule Tribe development citing allocation of Rs 78256.31 crores in Union Budget 2021-22, for Scheduled Tribe Component (STC) and Rs 12461.22 crores for Development Action Plan for Schedule Tribes in 2023-24. He mentioned in his speech that there has been an improvement in the situation of tribal people in terms of infrastructure and basic facilities. He also discussed that from 2012 to 2018, there has been an increase of 3% in roads and connectivity across the tribal regions, while a 12 % increase in electricity connection, 11.6% increase in drinking water facilities, and 35% increase in toilet facilities for ST households.

However, he added that poverty among tribes in India has also increased since 2005-06. There has been decline in Work Participation Rate (WPR) among STs from 70% in 1999-2000 to 54.1% in 2017. In terms of health services, he pointed out that public health infrastructures like subcenters and primary health centres are deficit in numbers especially in states like Jharkhand, Odisha, Madhya Pradesh, Maharashtra, and Rajasthan causing a major impact on tribal health.He discussed the National Education Policy (NEP) 2020, which promotes regional language is however oblivious of tribal languages and has limited impact among the tribal students.

Lastly he discussed about how various attempts have been made in diluting the protective provisions given in the constitution for the tribal people such as Chhota Nagpur Tenancy Act, Santhal Pargana Tenancy Act, Land Acquisition, Rehabilitation and Resettlement Act, India Forest Act, EIA process for environmental clearance etc. through different amendments introduced by the government. He mentioned that the main issue lies in the violation of these protective measures and that the key issues with which tribes in India have been confronted remain intact.

About the Dr K S Singh Tribal Resource Centre

The Resource Centre features approx. 3500 books, more than 400 manuscripts, handwritten and typed notes of Dr Kumar Suresh Singh on a range of topics including Birsa Munda, Tribal Movements in India, Tribal Society of India etc. The Resource Centre is in process of digitalising the entire centre for people to access from across the world. For more details on the vast collection available, membership policy and timings of the resource centre, one can connect with the XISS Library through the website.

PRESS : MORNING INDIA

शुभम संदेश
epaper.lagatar.in
17 Nov 2023 - Page 9

आदिवासियों की स्थिति में सुधार हुआ है : प्रो. वर्जिनियस खाखा

संवाददाता। रांची

प्रो. वर्जिनियस खाखा ने कहा कि बुनियादी ढांचे और बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासियों की स्थिति में सुधार हुआ है. 2012 से 2018 तक आदिवासी क्षेत्रों में सड़कों और कनेक्टिविटी में 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है. बिजली कनेक्शन में 12 % , पीने के पानी की सुविधाओं में 11.6% और शौचालय सुविधाओं में 35% की वृद्धि हुई है. उन्होंने आगे कहा कि 2005-06 के बाद से भारत में जनजातियों के बीच गरीबी भी बढ़ी है. एसटी के बीच काम की भागीदारी दर में 1999-2000 में 70% से घटकर 2017 में 54.1% हुई है. वे जेवियर सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस) में डॉ. सुरेश सिंह की 90वीं जयंती पर उनकी

स्मृति में आदिवासियों की 2013 से 2023 तक की स्थिति पर आयोजित व्याख्यान में बोल रहे थे. मौके पर डॉ सुरेश सिंह के नाम पर स्थापित ट्राइबल रिसोर्स सेंटर का उद्घाटन भी किया गया. स्वास्थ्य सेवाओं के संदर्भ में उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य उपकेंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में बुनियादी ढांचे की कमी है. उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर भी चर्चा की. कहा यह क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा देती है.

PRESS : SHUBHAM SANDESH

एक्सआईएसएस में खाखा समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा द्वारा दिया गया पहला डॉ कुमार सुरेश मेमोरियल मेमोरियल लेक्चर

by Nitesh Verma November 16, 2023 0 17

SHARE 0

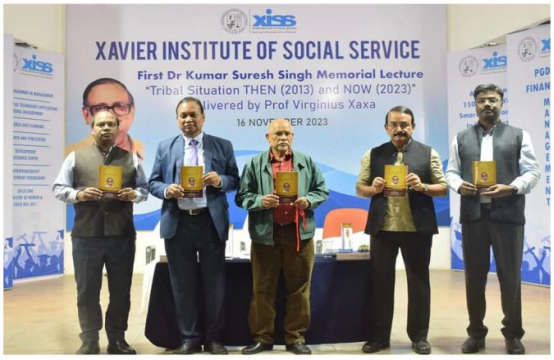

विषय: "आदिवासियों की स्थिति: उस समय (2013) और अब (2023)"

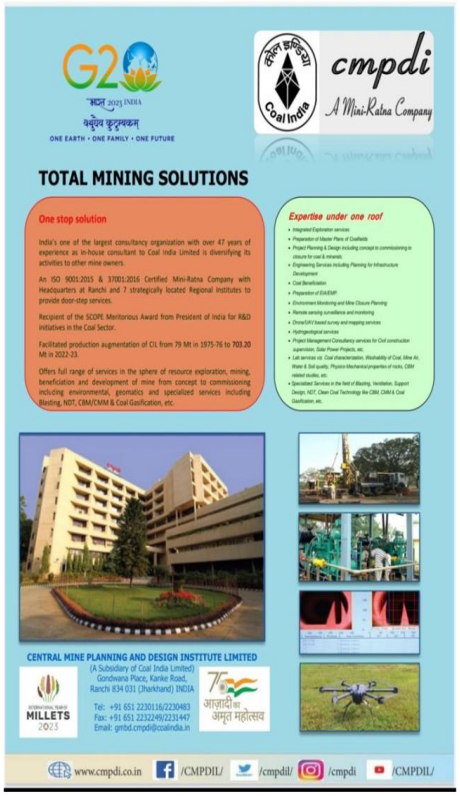

नितीश_मिश्र

राँची(खबर_आजतक): जेवियर समाज सेवा संस्थान (एक्सआईएसएस) ने गुरुवार को पहला डॉ कुमार सुरेश सिंह मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया। इस कार्यक्रम का आयोजन एक्सआईएसएस के फादर माइकल वान डेन बोगर्ट एसजे मेमोरियल ऑडिटोरियम में किया गया। यह कार्यक्रम डॉ कुमार सुरेश सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर, एक्सआईएसएस ने डॉ कुमार के 90वें जयंती पर किया। इस कार्यक्रम का थीम – आदिवासियों की स्थिति – उस समय (2013) और अब (2023) था।
वर्ष 2013 में प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह ने प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा की अध्यक्षता में एक उच्च-स्तरीय समिति (एचएलसी) का गठन किया था जिसके अंतर्गत इस समिति को भारत में आदिवासी समुदायों की सामाजिक-आर्थिक, शैक्षिक और स्वास्थ्य स्थिति की जांच करने और उचित हस्तक्षेप उपायों की सिफारिश करने को कहा गया था।

इस मेमोरियल लेक्चर के मुख्य अतिथियों में प्रोफेसर वर्जिनियस खाखा के साथ – साथ ध्रुव सिंह, डॉ मनमोहन सिंह के बेटे और उनके परिवार के साथ डॉ. मनमोहन सिंह के दोस्तों और सहकर्मियों सहित कई अतिथि शामिल थे जो डॉ मनमोहन सिंह की विरासत का सम्मान करने के लिए उपस्थित थे। इस कार्यक्रम की शुरुआत रिसोर्स सेंटर में डॉ मनमोहन सिंह की फोटो को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुई जिसमें सभी गणमान्य व्यक्तियों, एक्सआईएसएस के सभी कार्यक्रमों के प्रमुखों, फैकल्टी और कर्मचारियों ने भाग लिया।

वहीं प्रोफेसर एमेरिटस, प्रो. वर्जिनियस खाखा ने मेमोरियल लेक्चर में खाखा समिति की 2014 की रिपोर्ट में उल्लिखित प्रमुख मुद्दों का संदर्भ देते हुए भारत में जनजातीय स्थिति को प्रस्तुत किया। उन्होंने केंद्रीय बजट 2021-22 में अनुसूचित जनजाति घटक (एसटीसी) के लिए ₹78256.31 करोड़ और 2023-24 में अनुसूचित जनजातियों के लिए विकास कार्य योजना के लिए ₹12461.22 के आवंटन का हवाला देते हुए अनुसूचित जनजाति विकास के लिए बजट के उच्च आवंटन पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि "बुनियादी ढाँचे और बुनियादी सुविधाओं के मामले में आदिवासी लोगों की स्थिति में सुधार हुआ है। 2012 से 2018 तक, आदिवासी क्षेत्रों में सड़कों और कनेक्टिविटी में 5% की वृद्धि हुई है, जबकि एसटी परिवारों के लिए बिजली कनेक्शन में 12% की वृद्धि, पीने के पानी की सुविधाओं में 11.6% की वृद्धि और शौचालय सुविधाओं में 35% की वृद्धि हुई है।"

हालाँकि, उन्होंने आगे कहा कि 2005-06 के बाद से भारत में जनजातियों के बीच गरीबी भी बढ़ी है। एसटी के बीच कार्य भागीदारी दर (डब्ल्यूपीआर) में 1999-2000 में 70% से घटकर 2017 में 54.1% हो गई है। स्वास्थ्य सेवाओं के संदर्भ में, उन्होंने बताया कि उप-केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों जैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे की कमी है। विशेषकर झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्यों में जनजातीय स्वास्थ्य पर बड़ा प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 पर भी चर्चा की, जो क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा देती है, हालाँकि आदिवासी भाषाओं से अनभिज्ञ है और आदिवासी छात्रों के बीच इसका प्रभाव सीमित है।

एक्सआईएसएस के निदेशक डॉ जोसेफ मरियानुस कुजूर एसजे ने गर्मजोशी से स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। डॉ जोसेफ मरियानुस कुजूर ने मेमोरियल लेक्चर की रुपरेखा तय की और इस विषय की महत्ता को रेखांकित किया और आदिवासी समाज के लिए डॉ सिंह के कार्य एवं योगदान को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि "संस्थान को ऐसे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध सिविल सेवक, इतिहासकार और मानवविज्ञानी के नाम पर एक ट्राइबल रिसोर्स सेंटर स्थापित करने पर गर्व है। इस रिसोर्स सेंटर की स्थापना का उद्देश्य इस महान योगदानकर्ता को मान्यता देना और देश भर के विद्वानों को आदिवासी विकास में आगे के शोध के लिए उनके निष्कर्षों से परामर्श करने के लिए प्रोत्साहित करना है। यह मेमोरियल लेक्चर पिछले 10 वर्षों में विभिन्न विकास संकेतकों जैसे ट्राइबल सब-प्लान, स्वास्थ्य, शिक्षा, गरीबी आदि पर आदिवासियों की स्थिति पर चर्चा करता है। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह स्मारक व्याख्यान भविष्य में विभिन्न विद्वानों को केंद्र की ओर आकर्षित करेगा और एक्सआईएसएस बड़े पैमाने पर जनजातियों पर साहित्य में योगदान देने में सक्षम होगा।"

हालाँकि, उन्होंने आगे कहा कि 2005-06 के बाद से भारत में जनजातियों के बीच गरीबी भी बढ़ी है। एसटी के बीच कार्य भागीदारी दर (डब्ल्यूपीआर) में 1999-2000 में 70% से घटकर 2017 में 54.1% हो गई है। स्वास्थ्य सेवाओं के संदर्भ में, उन्होंने बताया कि उप-केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों जैसे सार्वजनिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे की कमी है। विशेषकर झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्यों में जनजातीय स्वास्थ्य पर बड़ा प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 पर भी चर्चा की, जो क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा देती है, हालाँकि आदिवासी भाषाओं से अनभिज्ञ है और आदिवासी छात्रों के बीच इसका प्रभाव सीमित है।

अंत में उन्होंने इस बात पर चर्चा की कि कैसे आदिवासी लोगों के लिए संविधान में दिए गए सुरक्षात्मक प्रावधानों जैसे सीएनटी एक्ट, संथाल परगना सीएनटी एक्ट, भूमि अधिग्रहण, पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन अधिनियम, भारत वन अधिनियम, पर्यावरण सम्बंधित ईआईए प्रक्रिया को कमजोर करने के विभिन्न प्रयास किए गए हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि मुख्य मुद्दा इन सुरक्षात्मक उपायों के उल्लंघन में निहित है और जिन प्रमुख मुद्दों का भारत में जनजातियों को सामना करना पड़ा है वे आज भी बरकरार हैं।

डॉ कुमार सुरेश सिंह ट्राइबल रिसोर्स सेंटर के बारे में

एक्सआईएसएस स्थित इस ट्राइबल रिसोर्स सेंटर में लगभग 3500 किताबें, 400 से अधिक हस्तलिपियां, जिनमें बिरसा मुंडा, भारत में जनजातीय आंदोलन, भारतीय जनजातीय समाज आदि सहित कई विषयों पर डॉ कुमार सुरेश सिंह के हस्तलिखित और टाइप किए गए नोट्स उपलब्ध हैं। रिसोर्स सेंटर को डिजिटल बनाने की प्रक्रिया चल रही है जिससे दुनिया भर से इच्छुक लोग इससे जुड़ सकेंगे। इस केंद्र में उपलब्ध इस विशाल संग्रह की सदस्यता और संसाधन केंद्र के समय के बारे में अधिक जानकारी के लिए, कोई भी एक्सआईएसएस लाइब्रेरी को वेबसाइट के माध्यम से जुड़कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकता है।

PRESS : KHABAR AAJTAK